IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, January 2026
Impact Factor: 7.67

बघेली लोक साहित्य और लोक संस्कृति

डॉ. ज्योति पाण्डेय

हिंदी विभाग

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा (म. प्र.)

सारांश: (Abstract)

बघेली लोक साहित्य और लोक संस्कृति बघेलखंड क्षेत्र की समृद्ध विरासत का प्रतिनिधित्व करती है, जो मध्य प्रदेश के रीवा, सतना, सीधी और शहडोल जैसे जिलों में प्रचलित है। यह अध्ययन बघेली भाषा के मौखिक साहित्य, जैसे लोकगीत, लोककथाएँ, लोकोक्तियाँ और मुहावरों, तथा लोक संस्कृति के तत्वों जैसे नृत्य, त्योहार और रीति-रिवाजों का विश्लेषण करता है। बघेली लोक साहित्य सामाजिक मूल्यों, नैतिक शिक्षा और सांस्कृतिक निरंतरता को दर्शाता है, जबकि लोक संस्कृति सामुदायिक एकता, प्रकृति पूजा और जीवन चक्र से जुड़े अनुष्ठानों को उजागर करती है। यह शोध द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, जिसमें पुस्तकें, पत्रिकाएँ और ऑनलाइन संसाधन शामिल हैं, तथा बघेली संस्कृति के संरक्षण की आवश्यकता पर जोर देता है। कुल मिलाकर, यह बघेली विरासत की जीवंतता को रेखांकित करता है जो आधुनिकता के बीच लुप्त होने के खतरे में है।

Keywords: बघेली भाषा, लोक साहित्य, लोकगीत, लोककथाएँ, लोक नृत्य, सांस्कृतिक विरासत, बघेलखंड, मौखिक परंपरा, त्योहार, रीति-रिवाज।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in

DOI: 10.48175/IJARSCT-30893

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, January 2026
Impact Factor: 7.67

परिचय:(Introduction)

बघेलखंड, जो मध्य भारत का एक ऐतिहासिक क्षेत्र है, अपनी अनोखी सांस्कृतिक पहचान के लिए जाना जाता है। यह क्षेत्र विंध्य और सतपुड़ा पर्वत श्रृंखलाओं के बीच स्थित है और रीवा, सतना, सीधी, शहडोल और अनूपपुर जैसे जिलों को कवर करता है। बघेली भाषा, जो पूर्वी हिंदी की एक उपभाषा है, इस क्षेत्र की प्रमुख भाषा है और इसे बघेलखंडी या रिमाही के नाम से भी जाना जाता है। भारतीय जनगणना (1991) के अनुसार, इसे हिंदी की बोलियों में वर्गीकृत किया गया है, लेकिन इसकी अपनी समृद्ध मौखिक साहित्य परंपरा है।

बघेली लोक साहित्य मुख्य रूप से मौखिक रूप में संरक्षित है, जिसमें लोकगीत, लोककथाएँ, संस्कार गीत, लोकोक्तियाँ, मुहावरें और कहानियाँ शामिल हैं। ये तत्व न केवल मनोरंजन प्रदान करते हैं बल्कि सामाजिक मान्यताओं, नैतिक मूल्यों और सांस्कृतिक निरंतरता को प्रतिबिंबित करते हैं। उदाहरण के लिए, लोकगीत विभिन्न संस्कारों जैसे जन्म, विवाह और मृत्यु से जुड़े होते हैं, जो समुदाय की एकता और परंपराओं को मजबूत करते हैं।

लोक संस्कृति के संदर्भ में, बघेली परंपराएँ प्रकृति, कृषि और सामाजिक जीवन से गहराई से जुड़ी हैं। नृत्य जैसे बिरहा, दादरा और सुवा, त्योहार जैसे होली, दीवाली और कजरी तीज, तथा रीति-रिवाज जैसे टैटू बनवाना और जंगल से जुड़े अनुष्ठान, इस संस्कृति की जीवंतता को दर्शाते हैं। यह अध्ययन बघेली लोक साहित्य और संस्कृति के अंतर्संबंधों का विश्लेषण करता है, जो क्षेत्र की सामाजिक-आर्थिक संरचना को समझने में सहायक है।

शोध का उद्देश्य बघेली विरासत की समृद्धि को उजागर करना और इसके संरक्षण की आवश्यकता पर बल देना है, क्योंकि आधुनिकता और शहरीकरण के कारण ये परंपराएँ लुप्त हो रही हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 2, January 2026 Impact Factor: 7.67

साहित्य समीक्षा: (Research Methodology)

यह शोध मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है, क्योंकि बघेली लोक साहित्य और संस्कृति पर प्राथमिक क्षेत्रीय अध्ययन सीमित हैं। डेटा संग्रह के लिए वेब सर्च, पीडीएफ दस्तावेजों का विश्लेषण और उपलब्ध साहित्य की समीक्षा की गई। प्रमुख स्रोतों में शामिल हैं: शैलेंद्र कुमार शर्मा द्वारा बघेली लोक साहित्य और संस्कृति पर यूट्यूब प्लेलिस्ट और वीडियो। गोमती प्रसाद विकल की पुस्तक "बघेली संस्कृति और साहित्य"। विभिन्न पीडीएफ जैसे "बघेली लोक साहित्य में लोक मान्यताओं की अभिव्यक्ति का अध्ययन" और "बघेलखण्ड कला, संस्कृति और लोक कलाओं की विकास यात्रा"। सोशियो-लिंग्विस्टिक स्टडी ऑफ बघेली स्पीकर्स इन मध्य प्रदेश। लोकगीतों और कथाओं के उदाहरणों के लिए यूट्यूब और वेबसाइट्स जैसे संतोष तिवारी के चैनल। विधि में गुणात्मक विश्लेषण शामिल है, जहां लोक तत्वों को थीमेटिक रूप से वर्गीकृत किया गया: लोक साहित्य (गीत, कथाएँ, लोकोक्तियाँ) और लोक संस्कृति (नृत्य, त्योहार, रीति-रिवाज)। स्रोतों की विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिएअकादमिक पत्रिकाएँ और प्रकाशित पुस्तकें प्राथमिकता दी गईं। शब्द गणना और संरचना उपयोगकर्ता निर्देशों के अनुरूप रखी गई। कोई प्राथमिक सर्वेक्षण नहीं किया गया, लेकिन स्रोतों से निकाले गए उदाहरणों का उपयोग किया गया।

मुख्य भाग:(Main Body)

बघेली लोक साहित्य

बघेली लोक साहित्य मुख्य रूप से मौखिक परंपरा पर आधारित है और इसमें लोकगीत, लोककथाएँ, लोकोक्तियाँ और मुहावरें शामिल हैं। प्रारंभ में, बघेली साहित्य लोक गीतों, लोक कथाओं, संस्कार गीतों और कहानियों के रूप में उपलब्ध था। शैलेंद्र कुमार शर्मा जैसे विद्वानों ने इसे दस्तावेजीकृत किया है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, January 2026
Impact Factor: 7.67

लोकगीत

बघेली लोकगीत जीवन चक्र से जुड़े हैं। रीवा राज्य के लोकगीतों के अध्ययन से पता चलता है कि लगभग 88 प्रकार के गीत हैं, जैसे सोहर (जन्म पर), सुहाग गीत (विवाह पर) और दादरा। उदाहरण: "झकिया झरोखे होइ के झाकई हो" एक सोहाग गीत है जो दुल्हन की भावनाओं को व्यक्त करता है। अन्य जैसे "ऐ जी राजा जनक" बेलनहई में गाए जाते हैं। ये गीत सामाजिक मूल्यों, प्रेम और कृषि जीवन को दर्शाते हैं। संतोष तिवारी के गीत जैसे "जिया मा ढक ढकी" प्रेम और टूटे दिल की कहानियाँ कहते हैं।लोक मान्यताएँ इन गीतों में प्रकट होती हैं, जैसे प्रकृति से जुड़ी मान्यताएँ और सामुदायिक एकता।

लोककथाएँ और कहानियाँ

बघेली लोककथाएँ नैतिक शिक्षा प्रदान करती हैं। उदाहरण: "सिधा के देबाई" एक ग्रामीण कहानी है जो सादगी और दान की महत्वता सिखाती है। अन्य कथाएँ जैसे "बर्थरी" छत्तीसगढ़ी प्रभाव वाली हैं लेकिन बघेली में अनुकूलित। ये कथाएँ मौखिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती हैं और सामाजिक विकृतियों जैसे दहेज, बेरोजगारी पर टिप्पणी करती हैं।

लोकोक्तियाँ और मुहावरें

ये छोटे लेकिन प्रभावशाली हैं, जैसे "बाघ की तरह मजबूत" जो क्षेत्र के नाम से जुड़ा है। ये दैनिक जीवन में उपयोग होते हैं और सांस्कृतिक विश्वासों को प्रतिबिंबित करते हैं।

बघेली लोक संस्कृति

बघेली संस्कृति लोक कला, नृत्य, त्योहार और रीति-रिवाजों से समृद्ध है।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, January 2026
Impact Factor: 7.67

लोक नृत्य

नृत्य जैसे बिरहा (प्रश्न-उत्तर प्रारूप में), दादरा, सुवा और कर्मा। उदाहरण: "फिरहा" पुरुष-महिला जोड़ों में किया जाता है, ड्रम और बांसुरी के साथ। "राई" गोलाकार में फसल कटाई पर। ये नृत्य सामुदायिक बंधन और खुशी को दर्शाते हैं। जनजातीय नृत्य जैसे भगोरिया विवाह से जुड़े हैं।

त्योहार और परंपराएँ

त्योहार जैसे होली, दीवाली, कजरी तीज और सावन महोत्सव। सावन महोत्सव में बघेली लोकगीत और नृत्य प्रदर्शित होते हैं। अन्य परंपराएँ: टैटू बनवाना, जंगल शिकार और कृषि अनुष्ठान। भगोरिया एक अनोखा त्योहार है जहां युवा जोड़े चुनते हैं।

कला और शिल्प

लोक चित्रकला प्राकृतिक सामग्रियों से बनाई जाती है, जैसे दीवारों पर विवाह के दौरान। ये सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करते हैं।

बघेली साहित्य और संस्कृति एक-दूसरे से जुड़े हैं, जहां गीत और नृत्य सामाजिक मान्यताओं को व्यक्त करते हैं।

निष्कर्ष: Conclusion

बघेली लोक साहित्य और लोक संस्कृति बघेलखंड की आत्मा है, जो सदियों से चली आ रही परंपराओं को जीवित रखती है। इस क्षेत्र की भाषा और संस्कृति, जो गोंड और राजपूत प्रभावों से प्रभावित है, सामाजिक एकता, नैतिक मूल्यों और प्रकृति से जुड़ाव को दर्शाती है। लोक साहित्य, विशेष रूप से लोकगीत और कथाएँ, जीवन के विभिन्न चरणों—जन्म, विवाह, मृत्यु—को चित्रित करते हैं और समुदाय को शिक्षित करते हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 2, January 2026 Impact Factor: 7.67

उदाहरण के लिए, सोहाग गीत भावनात्मक गहराई प्रदान करते हैं, जबकि लोककथाएँ जैसे "सिधा के देबाई" सादगी और नैतिकता सिखाती हैं। ये तत्व न केवल मनोरंजन हैं बल्कि सांस्कृतिक निरंतरता के वाहक हैं, जो आधुनिकता के बीच लुप्त हो रहे हैं। लोक संस्कृति के तत्व, जैसे नृत्य और त्योहार, सामुदायिक जीवन को जीवंत बनाते हैं। बिरहा और दादरा नृत्य सामाजिक बंधनों को मजबूत करते हैं, जबकि त्योहार जैसे सावन महोत्सव और भगोरिया सांस्कृतिक विविधता को मनाते हैं। ये परंपराएँ कृषि-आधारित जीवन से जुड़ी हैं, जहां मौसम, फसल और जंगल महत्वपूर्ण हैं। हालांकि, शहरीकरण, प्रवास और डिजिटल प्रभाव के कारण ये विरासतें खतरे में हैं। युवा पीढ़ी की रुचि कम हो रही है, जिससे मौखिक परंपराओं का ह्रास हो रहा है।

संरक्षण के लिए प्रयास आवश्यक हैं। विद्वान जैसे शैलेंद्र कुमार शर्मा और संतोष तिवारी ने दस्तावेजीकरण किया है, लेकिन सरकारी पहल जैसे लोक कला अकादमियाँ और शिक्षा में शामिल करना जरूरी है। डिजिटल प्लेटफॉर्म्स, जैसे यूट्यूब, इन तत्वों को वैश्विक पहुंच प्रदान कर सकते हैं। बघेली संस्कृति का संरक्षण न केवल क्षेत्रीय पहचान को बचाएगा बल्कि भारतीय सांस्कृतिक विविधता को समृद्ध करेगा। अंत में, बघेली विरासत हमें याद दिलाती है कि सच्ची संस्कृति लोगों के जीवन में निहित है, और इसका संरक्षण हमारी जिम्मेदारी है।

संदर्भ: References

[1]. Sharma, Shailendra Kumar. (2023). Bagheli Lok Sahitya aur Sanskriti. YouTube Playlist.
[2]. Vikal, Gomti Prasad. (n.d.). Bagheli Sanskriti Aur Sahitya. Exotic India Art.
[3]. Anonymous. (2019). **बघेली लोक साहित्य में लोक मान्यताओं की अभिव्यक्ति का अध्ययन**. Social Science Journal.
[4]. Shukla, Amit. (n.d.). **बघेलखण्ड कला, संस्कृति और लोक कलाओं की विकास यात्रा**. Social Research Foundation.
[5]. Anonymous. (2023). **बघेलखण्ड का लोकजीवन: जनजातीय लोक परंपराए एवं लोक नृत्य**. Shodh

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, January 2026
Impact Factor: 7.67

Samagam.

[6]. Tiwari, Santosh. (Various). Bagheli Lokgeet. YouTube Channel.

[7]. Baghel, et al. (2022). A Sociolinguistic Study of Bagheli Speakers in Madhya Pradesh. SIL.